श्री शिव गद्यं (श्री शिवापदान दंडक स्तोत्रं)

श्री शिव गद्यं (श्री शिवापदान दंडक स्तोत्रं)

शैलादिकृतनिषेवण कैलासशिखरभूषण तत्वार्थगोचर चंद्रार्धशेखर पाशायुधकुलार्थ्यस्मितापांग कोपारुणकटाक्ष भस्मितानंग सस्मितापांग ऊरीकृतविभूति दिव्यांगराग गौरीपरिगृहीतसव्यांगभाग अंगानुषंग पावितनरास्थिदेश गंगातरंगभासितजटाप्रदेश वंदनाभिरताखंडल स्यंदनायितभूमंडल आश्रितदासतापसकदंब चक्रीकृतार्कशीतकरबिंब आदृतपुराणवेतंड स्वीकृतसुमेरुकोदंड खर्वीकृतासुरमदानुपूर्वीविकास-दर्वीकरेश्वर गृहीतमौर्वीविलास-वीणामुनींद्रख्यापित गरिम पौरुष बाणाधिकार स्थापितपरमपूरुष अनिलाशनविहितनैपथ्य कमलासनविहितसारथ्य विश्वाधिकत्वपरिकलितोपलंभ अश्वायिताद्यवचोगुंभ कुंदस्मयहर कांतिप्रकर मंदस्मितलव शांतत्रिपुर नादबिंदुकळाभिज्ञास्पद भूरिभद्र स्वेदबिंदुलवाविर्भावित वीरभद्रत्रस्तरक्षा परतंत्रध्वस्तदक्षाध्वरतंत्र किरीटनीतविविधवेधःकपाल चपेटाघात शिथिलभास्वत्कपोल विजृंभितविक्रमोद्दंड स्तंभितचक्रिदोर्दंड ब्रह्मस्तवोचितमहाहर्ष जिह्मस्वभाव जनदुराधर्ष वसुंधराधरसुतोपलालन जरंदरासुरशिरोनिपातन कोपाहतपतितांतक व्यापादितसमदांधक परसंहननजटासंभृतपरभागगौर नरसिंहनियमनालंबितशरभावतार प्रसन्न भयमोचन विभिन्नभगलोचन प्रपंचदहनकारक विरिंचिवदनहारक संचारपूतमंदर पंचायुधातिसुंदर अपनीतदक्षानन अभिनीत भिक्षाटन धारितमेरुकानन कुसुममालिकालंकार दारितदारुकावनकुलपालिकाहंकार समावर्जितभक्तमानसानुसार परावर्तितदृप्ततापसाभिचार वैयासिकोक्तिगोचर वैयाघ्रकृत्तिभासुर गतपरिकर्मकृतस्पृह कृतकरिचर्मपरिग्रह स्वध्यानशमितपातकप्रसंग विध्यादिविबुधपूजितस्वलिंग शांतमानसानुरोध क्षांततापसापराध पालानलवलन भीषण हालाहलगरळभूषण अरुणांशुकंदळमणिफणिकुंडल चरणाग्रयंत्रित दशकंधरभुजमंडल आनंदतांडव नटनानुबंध गोविंदपूजितचरणारविंद विनयानतामृताशन सहस्राहितप्रमोद तनयाभिलाषिमाधवतपस्याकृत प्रसाद दिव्यास्त्र दानतोषित भृगुसूनुनम्य नव्याभागभावितहरिरूपरम्य वंदितागतश्रुतिधर नंदिपालित प्रतीहार बुद्धनानारहस्यशतमन्युमुखामरभक्तिगोचर दुग्धपानार्थ तपस्यदुपमन्युविश्राणितदुग्धसागर अधिकचालित दुष्टपीडाकरण हरिविरिंचापदृष्ट चूडाचरण अंचद्धर्मवृषाधार अधर्मप्रक्षाळनादर पंचब्रह्ममयाकार वेदाश्वरोहितस्वाम्य श्वेताश्वतरोपनिषद्गम्य चापल्यरहित रम्यस्वभाव कैवल्यवचनगम्यप्रभाव अखर्वमखादिराज्यप्रताप अधर्वशिखानुवाद्यस्वरूप अगर्वनरस्तुतिमुदित अधर्ववरस्तुतिविदित नादांतविभावनीय प्रणतार्तिहर प्रणवार्थसार मुग्धलावण्याधार शुद्धचैतन्याकार आशीविषधारक काशीपुरनायक हृदंबुजकृतविलास चिदंबरकृतनिवास आकर्णचलितापांग गोकर्णरचितानंग घोरासुरपुर धूमकेतु स्मित वाराकरगत रामसेतुस्थित रक्षणलीलाविलास दक्षिणकैलासवास आताम्रलोलनयन एकाम्रमूलभवन आभीलविधुसेवन श्रीशैलशिखरपावन द्राक्षामधुर वाग्गुंभ रुद्राक्षरुचिरदोस्तंभ कालकंठरुचिघटितलावण्यनीलकंठमुखि निहितकारुण्य सेवापरतंत्रपालक शैवागमतंत्रकारक सर्गस्थितिसंहृतित्रयस्थेय गर्भश्रुतियंत्रित गायत्र्यनुसंधेय अध्यासितवरनिकुंजगृहहिमाहार्य अध्यापितहरिविरिंचिमुखशिवाचार्य अर्चितानंतविहार सच्चिदानंदशरीर विजयीभव विजयीभव ||

दृष्ट्वा कौस्तुभमप्सरोगणमपि प्रक्रांतवादामिथो
गीर्वाणाः कतिवानसंति भुवने भारा दिवः केवलं |
निष्क्रांते गरळेद्रुते सुरगणे निश्चेष्टिते विष्टपे
माभैष्टेति गिराविरासधुरियो देवस्तमेवस्तुमः ||

इति श्रीनीलकंठदीक्षित विरचितं शिवापदानगद्य स्तोत्रं ||